17-08-99

दिलशिकस्त होने के बजाए दिलखुश मिठाई खाना और खिलाना

आज जब मैं बाबा के पास गई तो बापदादा को सुनाया कि छोटी-छोटी टीचर्स का ग्रुप आया है, तो बापदादा बहुत-बहुत मीठा मुस्कराये और बोला ये ग्रुप तो छोटे शुभान-अल्लाह हैं। बापदादा को छोटी-छोटी बच्चियां बहुत प्यारी हैं क्योंकि बापदादा इन्हों के त्याग और भाग्य को देख हर्षित होते हैं कि उस संसार की आकर्षण से छूटकर बापदादा के संसार में पहुँच गई हैं। और जान गई हैं कि वो तो दु:खी, अशान्त, असार संसार है। इतना बुद्धि से जानकर हिम्मत रखी है तो इन्हों के हिम्मत पर बापदादा भी बहुत-बहुत खुश हैं। फिर बाबा ने इस ग्रुप को एक टाइटिल देते हुए कहा कि – ''यह ग्रुप तो मेरे विशेष **गले की माला के मणके** हैं।'' बापदादा इस ग्रुप को यही वरदान देते हैं कि सदा हिम्मत और उमंग-उत्साह से आगे उड़ते रहो। कभी भी छोटी-मोटी बातों में दिलशिकस्त व कमज़ोर नहीं होना। सदा दिलखुश मिठाई खाते रहना और सबको भी दिलखुश मिठाई खिलाते रहना।

बापदादा को सदा अपने साथी के रूप में अनुभव करना, बापदादा से

सदा दिल की बातें करते रहना, साथ खाना और साथ चलना - ये पक्का अनुभव सदा करते रहना। सदा हर परिस्थिति में व किसी के भी संस्कारों से घबराना नहीं। सदा अपने गले में विजय माला चमकती हुई देखते रहना। सदा अपने को बापदादा के अति प्यारे हैं, ये अनुभव करते रहना। जिस समय बाबा ये शब्द बोल रहे थे उस समय ऐसे लग रहा था जैसे सब बापदादा के सामने इमर्ज हैं और बापदादा बहुत-बहुत जिगरी प्यार से सबको सजा रहे हैं।

इसके बाद बाबा बोले, अच्छा सभी इतने स्वीट बच्चे हैं तो इस ग्रुप को भी खेल करायें। ऐसे कहते, दृष्टि देते बाबा ने बोला – ''आओ बच्चे - आओ बच्चे'', बस बाबा का बोलना था कि सेकण्ड में सभी वतन में इमर्ज हो गये और क्या देखा कि अर्ध-चन्द्रमा समान हाल था, जिसमें सभी अपने-अपने स्थान पर बैठ गये और सामने स्टेज थी उस पर बहुत सुन्दर कलश एक-दो के ऊपर तीन-तीन रखे थे। साथ में एक बहुत सुन्दर बड़ा बगीचा था। तो बाबा बोले, हरेक बच्चे को ये तीन-तीन कलश सिर पर रख करके बगीचे के अन्त तक पहुँचना है। बस बाबा ने ताली बजाई और सब स्टेज के आगे पहुँच करके तीन कलश उठाने लगे। फिर तो बहुत सुन्दर दृश्य था, कोई तो तीन कलश को देख सोच में पड़ गई कि ये तो नहीं जायेगा, भारी है, कोई ने उठाया लेकिन थोड़ा चलने के बाद बोझ लगने के कारण बहुत धीमे, रुक-रुक कर जाने लगी, कोई बीच में एक या दो कलश उतार कर रुक भी गई, कोई-कोई चल तो रहे थे लेकिन कलश थोड़े हिलने लगते थे, तो भय में चल रहे थे। बाकी कुछ ऐसे भी थे जो बहुत खुशी-खुशी से डबल लाइट बन चलती गई और समय पर मंजिल पर पहुँच गई। लेकिन वो ज़्यादा नहीं थी, थोड़ी सी थी। और कोई ऐसी भी थी जो उठा तो लिया लेकिन रफ्तार बहुत ढीली थी इसलिए मंजिल पर समय पर नहीं पहुँच सकी। बहुत मज़ेदार दृश्य दिखाई दे रहा था। उसके बाद बाबा ने ताली बजाई तो जो जहाँ पर था वहीं पर खड़ा हो गया। कोई तो मंजिल पर पहुँच गये थे, कोई बीच-बीच में रह

गये थे। बाबा ने बीच में जाकर, सामने खड़े होकर सभी को दृष्टि दी और बोले – बच्चियां बापदादा आप बच्चों को सब ज़िम्मेवारियों की शक्ति से अब सम्पन्न देखना चाहते हैं। यह तीन कलष जो बाबा ने हर एक के सिर पर रखे - वह विशेष तीन ज़िम्मेवारियों के थे, तीनों कलश पर अलग-अलग लिखत थी - एक पर लिखा था - स्व-परिवर्तन की ज़िम्मेवारी। दूसरे पर लिखा था - सेवा साथियों से मिलकर आगे बढ़ने की ज़िम्मेवारी और तीसरे पर लिखा था - विश्व-परिवर्तन की ज़िम्मेवारी।

तो बाबा बोले – इन तीनों में से आप बच्चियों में जो भी शक्ति कम है, वो बापदादा व दादियों के व सेवा साथियों के सहयोग से अपने में भरनी है। और हरेक अपने को छोटा नहीं समझे लेकिन हर एक को शक्तिरूप बन तीनों ज़िम्मेवारियों के निमित्त-आत्मा समझ बापदादा समान बनना है। ऐसे एक-एक को बाबा मीठी दृष्टि दे रहे थे, ऐसे दृष्टि देते-देते ये दृश्य पूरा हो गया। सभी बहुत मौज में मुस्कराती रही और मैं भी ये दृश्य देखते-देखते स्थूल वतन में पहुँच गई। ओमशान्ति।

(दादी जी और दादी जानकी जी के प्रति-सन्देश)

दादी, बाबा का इस ग्रुप के प्रति दिल से इतना प्यार था, जो ऐसे लग रहा था जैसे बाबा चाहता है कि मेरी एक-एक बच्ची अभी ही सम्पूर्ण बन जाए। बाबा ने एक-एक को जैसे दिल में समा दिया।

बाबा ने आप और दादी जानकी दोनों को अपने दोनों हाथों पर बिठाया और ऐसे उड़ाया जैसे पंछी को उड़ाते हैं, आप दोनों दादियां इतनी हल्की थी, जो आप दोनों ही बाबा के हाथों में समा गई। जैसे कोई आसन लगाकर बैठता है, ऐसे आप दोनों बाबा के हाथों में बैठ गई और बाबा ने ऐसे किया तो उड़ गई फिर बाबा ने ताली बजाई और आप नीचे आ गई तो बाबा ने गोदी में बिठाकर दिल में समा लिया। फिर बाबा ने कहा कि आप दोनों दादियों को अपनी तबियत का बहुत ख्याल रखना है क्योंकि आगे चलकर आप दोनों को बहुत-बहुत आगे बढ़कर सहयोग देना है। इसलिए अपनी बॉडी को बाबा

की तरफ से अमानत समझकर अमानत को सम्भालकर चलाओ। मनोहर दादी, रतनमोहनी दादी, शान्तामणि दादी, मोहिनी बहन, मुन्नी बहन और जो भी विशेष टीचर्स की सेवा के निमित्त हैं, उन्हों से बाबा ने हाथ मिलाकर बहुत स्नेह से नयन मुलाकात की तो सभी स्नेह में इतना खो गई जैसे नदी सागर में समा जाती है। और जो भी सेवा के निमित्त हैं, बाबा ने सभी के लिए बहुत दिल से याद और प्यार दिया है। हर एक अपने-अपने नाम से याद-प्यार स्वीकार करें। अच्छा। ओमशान्ति।